“श्री गुरु तेग बहादुर - आस्था की ढाल”

गुरु शिक्षा- 2025

ईश्वरीय एकता, सत्यनिष्ठ जीवन, समानता एवं सार्वभौमिक सद्भावना सिख धर्म के मूल आदर्श हैं। महान गुरु, श्री **गुरु नानक देव जी** द्वारा स्थापित और दस गुरुओं की परंपरा द्वारा अग्रसित सिख धर्म ने मध्यकालीन भारत में सामाजिक एवं आध्यात्मिक पुनर्जागरण का सूत्रपात किया। पवित्र ग्रंथ, **गुरु ग्रंथ साहिब**, ग्यारहवें और शाश्वत गुरु के रूप में पूजनीय है, जो सत्य और ज्ञान के पथ पर चलने के लिए मानवता का मार्गदर्शन करता है। ईश्वर का ध्यान (नाम जपना), सत्य जीवन (कीरत करनी) और दूसरों के साथ साझा करना (वंड छकना) ये सिख धर्म के तीन प्रमुख सिद्धांत हैं जो आध्यात्मिक, नैतिक जीवन व निस्वार्थ सेवा में संतुलन व सद्भाव पर बल देते हैं।

गुरु तेग बहादुर जी, सिख धर्म के नौवें गुरु जो मानवीय गौरव, धार्मिक स्वतंत्रता और लोगों के आध्यात्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए जाने जाते हैं, उन्हें **‘हिंद की चादर’** यानी **‘भारत की ढाल’** की उपाधि से सम्मानित किया गया है। नौवें आध्यात्मिक गुरु, **गुरु हरगोबिंद** जी ने उन्हें सर्वप्रथम युद्ध के मैदान में उनके अद्भुत युद्ध कौशल और वीरता के लिए ‘**तेग बहादुर’** के नाम से अभिहित किया। गुरु तेग बहादुर जी बहुत कम उम्र में ही गणित, संगीत, कला एवं साहित्य, शास्त्र और युद्धकला में पारंगत हो गए थे। उन्होंने पवित्र नगर **‘आनंदपुर साहिब’** की स्थापना की, जो शाश्वत आनंद का शहर है। उनके द्वारा विरचित 116 भजन, जो उत्कृष्ट काव्य और दिव्यता से परिपूर्ण हैं, गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित किये गये हैं।

एक आध्यात्मिक योद्धा के रूप में प्रख्यात, गुरु तेग बहादुर एक प्रबुद्ध गुरु एवं वीर साहसिक योद्धा थे, जो ज्ञान एवं वीरत्व की एकता के आदर्शावतार थे।

उनका आध्यात्मिक जीवन सभी की व्यक्तिगत आस्था के लिए कदम उठाने के लिए जाना जाता है, जिसने उन्हें जीवन के एक पड़ाव पर बलिदानी बना दिया। उन्होंने सांप्रदायिकता के विरुद्ध संघर्ष करके लोगों की धार्मिक स्वतंत्रता का पुरज़ोर समर्थन किया। कवि सेनापत ने उन्हें **'सम्पूर्ण सृष्टि का रक्षक'** एवं **'मानवता का उद्धारक'** की उपाधि से अभिहित किया है। उनका निर्भीक बलिदानी जीवन जो **निरबाऊ** (कोई भय नहीं) एवं **निरवैर** (कोई शत्रुता नहीं) के प्रभाव को प्रदर्शित करता है, ने सिख भावना की आधारशिला रखी।

जब कश्मीर के पंडितों ने उनसे औरंगज़ेब की अत्याचारी व दमनकारी नीतियों तथा धर्मांतरण के प्रयासों की शिकायत की, तब **गुरु तेग बहादुर** ने उनका बचाव करने के लिए एक दूत के रूप में औरंगज़ेब से मिलने जाने का फैसला किया। उनके भक्त शिष्य भाई मतिदास, भाई दयालदास और भाई सतीदास भी उनके प्रतिनिधिमंडल में सम्मिलित थे। उन्हें दिल्ली में गिरफ़्तार कर लिया गया, प्रारंभ में उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए प्रलोभन दिया गया। जब उन्होंने मुगलिया सल्तनत का विरोध किया, तो उनके तीन शिष्यों की उनकी आँखों के सामने यातनापूर्ण निर्मम हत्या कर दी गई। धार्मिक अधिकारों के रक्षक के रूप में, गुरु तेग बहादुर, जिन्होंने किसी भी उत्पीड़न के बावजूद धर्म परिवर्तन का विरोध किया, शांत, निडर और दृढ़ निश्चयी रहे और ईश्वर का ध्यान करते रहे।

गुरु तेग बहादुर के दृढ़ निश्चय को देखकर, औरंगज़ेब के आदेश पर दिल्ली में कोतवाली के पास, सभी के समक्ष, श्री गुरु तेग बहादुर का शीश काट दिया। किसी ने भी गुरु तेग बहादुर के मृत शरीर के पास जाने का साहस नहीं किया। तब भाई जैता जी किसी तरह साहस करते हुए, उनके शीश को आनंदपुर साहिब शहर ले गए। भाई लखी शाह वंजारा नामक एक व्यापारी, जिसने संदेह से बचने के लिए गुरु के पार्थिव शरीर को कपास के ढेर में छिपाकर रखा था, ने अपना घर जलाकर उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित की। गुरु तेग बहादुर ने न केवल लोगों के आध्यात्मिक अधिकारों की रक्षा की, बल्कि किसी भी समुदाय के उत्पीड़ित लोगों के आध्यात्मिक अधिकारों की भी रक्षा की। उनका अद्वितीय साहस, बलिदान और शहादत भारत के आध्यात्मिक इतिहास के में एक मील का पत्थर है व दुनिया के लिए एक संदेश है, जो आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करता रहेगा।

11 नवंबर, 1675 को उनकी शहादत का दिन, भारत में धार्मिक सद्भाव एवं धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए स्मरण किया जाता है। विविधता में एकता और धार्मिक सद्भाव, आधुनिक युग में भारत के एक राष्ट्र के रूप में अद्वितीय गुण माने जाते हैं। ये आदर्श शायद गुरु तेग बहादुर जैसी दिव्य आत्माओं के समर्पण व बलिदान से ही उत्पन्न हुए होंगे।

गुरु तेग बहादुर जी में धार्मिक स्वतंत्रता के लिए खड़े होने तथा अनुकरणीय शूरवीरता का प्रदर्शन करने के गुण विद्यमान थे, जो भारतीयता के मूलभूत तत्व हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि ये आदर्श सिख धर्म को तमिलनाडु से बहुत गहराई से जोड़ते हैं। गुरु तेग बहादुर का जीवन थिरुनावुकरसर जैसे नयनार संतों के समान है, जिन्होंने दृढ़तापूर्वक धर्मांतरण का विरोध किया, उत्पीड़न के बावजूद साहसपूर्वक गाते रहे, यहाँ तक कि जब उनके गले में एक चट्टान बाँधकर उन्हें समुद्र में फेंक दिया गया, तब भी वे अपने भगवान का नाम जपते रहे।

गुरु तेग बहादुर और औरंगज़ेब के बीच टकराव को सिख धर्म और इस्लाम के बीच संघर्ष के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझा जाना चाहिए, जो लोगों के आध्यात्मिक अधिकारों पर मुगल सम्राट के राज्य उत्पीड़न के खिलाफ लिया गया एक उचित कदम था।

सिख धर्म वास्तव में सभी धर्मों का बहुत सम्मान करता है और इसकी मूल प्रकृति अत्यंत समावेशी है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि गुरु नानक देव जी के मानवता के लिए पहले शब्द थे, "न कोई हिंदू है, न कोई मुसलमान, हम सभी ईश्वर की संतान हैं।" और गुरु अर्जन देव का जीवन हमें यह भी बताता है कि वे विभिन्न धर्मों के लोगों के प्रति कितने उदार थे। उन्होंने स्वर्ण मंदिर की आधारशिला रखने के लिए सूफी संत मियां मीर को आमंत्रित किया, जो उनकी उदारता एवं समावेशी आस्था प्रणाली का प्रमाण है।

सिख दर्शन अपने मूल में जाति, पंथ, धार्मिक पहचान से परे है और वैश्विक एकजुटता एवं सद्भाव का आह्वान करता है। संघर्ष, चिंता व आंतरिक अशांति से त्रस्त दुनिया में, मानवता को स्वस्थ एवं जागृत करने में सिख धर्म की आज भी बड़ी भूमिका और प्रासंगिकता है। युवा मन में साहस, दृढ़ता, त्याग और आध्यात्मिक अखंडता का संचार करना समय की मांग है और श्री गुरु तेग बहादुर की विरासत के माध्यम से इन्हें प्राप्त करने का प्रयास, **'आस्था की ढाल'** आज सबसे उत्तम मार्ग है।

आधुनिक युग में व्यक्तिवाद सर्वोपरि हो गया है, आत्म-केंद्रितता और भौतिक लक्ष्य आदर्श बन गए हैं, ऐसे समय में गुरु तेग बहादुर का जीवन एवं मिशन जागृतिदप्रदायक व उदाहरण है।

इस वर्ष गुरु तेग बहादुर की शहादत की 350वीं वर्षगांठ के अवसर पर, उनके नाम को समर्पित करने के लिए पूरे देश में नगर कीर्तन - सद्भाव और आध्यात्मिक दृढ़ संकल्प को दर्शाने वाली आध्यात्मिक रैलियों का आयोजन बड़े पैमाने पर समारोह के साथ किया जा रहा है। गुरु तेग बहादुर का प्रबुद्ध मार्ग और उनकी अद्वितीय शहादत दुनिया के लिए साहस, त्याग, निस्वार्थता, आध्यात्मिक निष्ठा और विश्व बंधुत्व का एक शाश्वत उदाहरण है। श्री गुरु तेग बहादुर जी की 350वीं शहादत वर्षगांठ के उपलक्ष्य में, इस वर्ष "गुरु तेग बहादुर: आस्था की ढाल" शीर्षक पर गुरु शिक्षा प्रतियोगिताएँ आयोजित की जा रही हैं।

गुरु नानक महाविद्यालय की स्थापना 1971 में वेलाचेरी, चेन्नई में सिख धर्म के प्रवर्तक एवं श्रद्धेय संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी की 500वीं जयंती के उपलक्ष्य में की गई थी। लेफ्टिनेंट कर्नल जी.एस. गिल ने शिक्षा के माध्यम से सामाजिक उत्थान और सामुदायिक सेवा के महान आदर्शों को ध्यान में रखते हुए गुरु नानक शैक्षिक संस्था के माध्यम से इस संस्थान की स्थापना की थी। **'सरबत दा भला'** – **सभी का कल्याण**(हीत), एक प्रमुख सिख सिद्धांत गुरु नानक महाविद्यालय का मार्गदर्शक सिद्धांत और आदर्श वाक्य है। 50 वर्षों से अधिक शैक्षिक सेवा तथा तमिलनाडु के साथ गहरे सामाजिक-सांस्कृतिक जुड़ाव के साथ, यह महाविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नए मानक स्थापित करते हुए अभूतपूर्व प्रगति कर रहा है।

इस महविद्यालय को जीवन के सभी क्षेत्रों, जैसे शिक्षा, खेल, सांस्कृतिक और राष्ट्र सेवा, में प्रतिस्पर्धा करते हुए, एक जीवंत भारत के निर्माण हेतु, हजारों प्रतिभाशाली और अनुकरणीय स्नातक तैयार करने पर गर्व है। गुरु नानक एजुकेशनल सोसाइटी का एक सहयोगी संस्थान, गुरु नानक मैट्रिकुलेशन हायर सेकेंडरी स्कूल भी भारत की नव युवा छात्र शक्ति का समपोषण करता है।

सिख धर्म के आध्यात्मिक सार को आत्मसात करने और युवा पीढ़ी को इसके सिद्धांतों और मूल्यों से अवगत कराने के लिए, गुरु नानक एजुकेशनल सोसाइटी, गुरु शिक्षा शीर्षक के अंतर्गत राज्य स्तरीय अंतर-विद्यालयीन और अंतर-महाविद्यालयीन प्रतियोगिताओं का आयोजन कर रही है। यह वार्षिक आयोजन तीन भाषाओं - तमिल, हिंदी और अंग्रेजी - में आयोजित किया जाता है।

गुरु शिक्षा प्रतियोगिताएँ नियमित रूप से आयोजित की जा रही हैं जिनमें विभिन्न विद्यालयों और महाविद्यालयों से बड़ी संख्या में उत्साहपूर्वक भाग लिया जा रहा है। यह देखना उत्साहजनक और प्रेरणादायक है कि कैसे विद्यालयों और महाविद्यालयों के उभरते हुए छात्र गुरु शिक्षा में सिख धर्म की भावना को नवीन दृष्टिकोणों के साथ आत्मसात करते हैं, और अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं।

हर साल आयोजित होने वाली गुरु शिक्षा प्रतियोगिताएँ सामाजिक और आध्यात्मिक एकता के उत्सव के रूप में कार्य करती हैं, जो गहन सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से सिख और तमिल समुदायों के बीच के बंधन को दृढ़ता प्रदान करती हैं। विजेताओं को नकद पुरस्कार, ट्रॉफी और प्रमाण पत्र प्रदान किए जाते हैं। ये प्रतियोगिताएँ राज्य भर के सभी छात्र समुदाय के लिए बिना किसी पंजीकरण शुल्क के खुली हैं।

भारी भागीदारी और उत्साह के साथ, प्रारंभिक परीक्षाएँ स्कूल और परिसर में आयोजित की जाती हैं। अंतिम चरण कॉलेज के बाबा दीप सिंह सभागार में, एक विशाल दर्शक दीर्घा के समक्ष आयोजित किया जाता है और समापन समारोह बड़े धूमधाम और भव्यता के साथ आयोजित किया जाता है, जिसमें सम्मानित अतिथियों और प्रतिष्ठित हस्तियों को आमंत्रित किया जाता है।

यह देखना हर्ष एवं उत्साहवर्धक है कि गुरु शिक्षा में विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की भागीदारी साल दर साल बढ़ रही है, जो आध्यात्मिक खोज, आंतरिक शांति व मूल्य निर्माण में बढ़ती जागरूकता का संकेत है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, इस वर्ष गुरु शिक्षा प्रतियोगिताएं "गुरु तेग बहादुर: आस्था की ढाल" विषय पर भाषण, पोस्टर मेकिंग और पॉडकास्ट में पांच श्रेणियों में आयोजित की जाएंगी, अर्थात् अल्फा- कक्षा 1 से 5, बीटा- कक्षा 6 से 8, गामा- कक्षा 9 से 12, डेल्टा- कॉलेज स्तर, एप्सिलॉन- स्टाफ सदस्यों के लिए तीन भाषाओं - तमिल, हिंदी और अंग्रेजी में।

ये प्रतियोगिताएँ 15 और 16 अक्टूबर 2025 को वेलाचेरी स्थित गुरु नानक महाविद्यालय एवं गुरु नानक विद्यालय में आयोजित की जाएँगी। विजेताओं को 5 लाख रुपये तक के आकर्षक नकद पुरस्कार, ट्रॉफी और प्रमाण पत्र दिए जाएँगे। ऑनलाइन पंजीकरण बहुत अधिक मात्र में किये जा रहे हैं। ऑन स्पॉट पंजीकरण की भी व्यवस्था है।

इस अवसर पर तमिलनाडु के सभी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्र छात्राओं को गुरु शिक्षा के 10वें संस्करण में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है। हम भविष्य के पथप्रदर्शकों को आमंत्रित करते हैं कि वे अपनी रचनात्मक शक्ति को प्रदर्शित करें, गहन विचारों से प्रेरणा लें तथा सिख आध्यात्मिकता व एकजुटता के इस भव्य उत्सव को आत्मसात करें।

गुरुशिक्षा 2025 – 10वां संस्करण

राज्य स्तरीय अंतर-महाविद्यालयीन एवं अंतर-विद्यालयीन प्रतियोगिताएँ

दिनांक : 15 व 16 अक्टूबर, 2025

समय: सुबह 9:00 बजे से

स्थान: गुरु नानक कॉलेज परिसर, वेलाचेरी, चेन्नई

प्रतियोगिताओं में सम्मिलित हैं:

- कक्षा 1 से महाविद्यालय स्तर तक के सभी छात्र-छात्राएँ एवं गुरु नानक महा विद्यालय एवं विद्यालय के कर्मचारियों के लिए पाँच श्रेणियों में भाषण प्रतियोगिताएँ (तमिल, हिंदी, अंग्रेजी)।
- कक्षा VI से VIII के विद्यार्थियों के लिए पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता
- कक्षा IX से XII के विद्यार्थियों एवं महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए पॉडकास्ट (नयी प्रस्तुति)

विषय: “श्री गुरु तेग बहादुर- आस्था की ढाल”

श्री गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान 350वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में

- **5,00,000₹ लाख तक के नकद पुरस्कार**

भाषण प्रतियोगिता (तमिल, हिंदी, अंग्रेजी):

- **अल्फा- कक्षा I से V: ₹9,000 / ₹7,000 / ₹5,000**
- **बीटा- कक्षा VI से VIII: ₹11,000 / ₹9,000 / ₹7,000**
- **गामा- कक्षा IX से XII ₹13,000 / ₹11,000 / ₹9,000**
- **डेल्टा - कॉलेज स्नातक/स्नातकोत्तर: ₹13,000 / ₹11,000 / ₹9,000**
- **पोस्टर निर्माण**
- **बीटा (कक्षा VI से VIII) के लिए पोस्टर बनाना: ₹9,000 / ₹7,000 / ₹5,000**
- **पॉडकास्ट-**
- **गामा और डेल्टा (कक्षा IX से XII और स्नातक/स्नातकोत्तर) के लिए पॉडकास्ट: ₹12,000 / ₹10,000 / ₹8,000**
- **सांत्वना पुरस्कार: ₹75,000**

यह भव्य आयोजन मानवीय संबंधो को प्रबल बनाने की एक विनम्र पहल है जिसका प्रारंभ पाँच वर्ष की आयु से ही हो जाता है। यह आयोजन गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान, साहस, सहनशीलता एवं आस्था के सार्वभौमिक मूल्यों की याद दिलाता है, जो हमारे महान राष्ट्र की भावी पीढ़ियों को प्रेरित करता है।

सादर,

पंजीकरण के लिये स्कैन करें-